The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 4 | April 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

उच्चतर माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

[1] आरिफ खान
शोधार्थी एजुकेशन ट्रेनिंग
हलीम मुस्लिम पी0जी0 कॉलेज, कानपुर
Khan4uora@gmail.com

[2] डॉ0 मोहम्मद इरशाद हुसैन
एसोसिएट प्रोफेसर डिपार्टमेंट ऑफ टीचर एजुकेशन
हलीम मुस्लिम पी0जी0 कॉलेज, कानपुर
Irshad218@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords :
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उपलब्धि अभिप्रेरणा, वित्तपोषित, स्ववित्तपोषित विद्यालय के छात्र–छात्राएं

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश के जनपद फर्रुखाबाद के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित 12वीं कक्षा स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। इस अध्ययन में 12वीं कक्षा स्तर पर अध्यनरत वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित स्कूलों के विद्यार्थियों पर उपलब्धि अभिप्रेरणा को ज्ञात किया गया है। इस शोध में नयादर्श के रूप में 150 छात्र व 150 छात्राओं को चयनित किया है। तथा विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के मापन हेतु डॉ0 वी0पी0 भार्गव द्वारा निर्मित उपलब्धि अभिप्रेरणा टेस्ट का प्रयोग किया है। उपलब्धि अभिप्रेरणा किसी परिस्थिति विशेष में अपने कार्य, लक्ष्य तथा उद्देश्यों की प्राप्ति करने हेतु किसी व्यक्ति विशेष को स्वप्रेरित करती है।

1. प्रस्तावना :

उपलब्धि अभिप्रेरणा एक मुख्य सामाजिक अभिप्रेरक है। इसका आशय ऐसे अभिप्रेरक से है जिससे अभिप्रेरित होकर व्यक्ति अपने जीवन के कार्यों को इस प्रकार करता है कि ज्यादा से ज्यादा सफलता की प्राप्ति हो सके। किसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए प्राणी में व्यवहार को उत्पन्न करके उसे एक निश्चित दिशा की प्राप्ति उपलब्धि अभिप्रेरणा के माध्यम से होती है। तथा उसे लक्ष्य की प्राप्ति

होने तक बनाएं भी रखती है। अभिप्रेरणा एक लैटिन भाषा का शब्द है जिससे आशय गति,चलाना, आगे बढ़ाना आदि। अभिप्रेरणा को शक्ति भी कहा जाता है क्योंकि यह निर्धारित किए हुए उद्देश्यों की ओर गति करती है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने प्राणियों में पाई जाने वाली उपलब्धि अभिप्रेरणा से संबंधित व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनेक कारण बताएं हैं। क्योंकि समाज में सभी व्यक्तियों में उपलब्धि अभिप्रेरणा एक समान नहीं होती है। किसी में काम तो किसी में ज्यादा। जिसमें उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर उच्च होता है उनके सफल होने की संभावना भी अधिक होती है। इसी विभिन्नता के मनोवैज्ञानिकों ने प्रमुखता से कई कारण बताए हैं। जिसमें मुख्य कारण अभिभावकों द्वारा बचपन में अपने बच्चों को प्रदान की गई स्वतंत्रता है। कुछ माता–पिता बच्चों को छोटा समझकर कार्यों को करने से रोकते हैं तथा कुछ कार्यों को करने में स्वतंत्रता प्रदान करते हैं तथा बच्चों को प्रोत्साहित भी करते हैं इस प्रकार पहले बच्चों की अपेक्षा दूसरे बच्चों को स्वतंत्रता प्रशिक्षण का अनुभव पूर्व से ही होता रहता है। जिससे जब बच्चे बड़े होते हैं तो उनमें उपलब्धि अभिप्रेरणा भी अधिक होती है। व्यक्ति के सफलता की दृष्टि से उपलब्धि अभिप्रेरणा को जीवन के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। अभिप्रेरणा की इस क्रिया विधि में प्रेरक या इच्छा, आवश्यकता मिलकर एक अभिप्रेरणा चक्र बनता है जो कि सीधे उपलब्धि से संबंधित है। इसी अभिप्रेरणा या आवश्यकता का प्रतिपादन हेनरी मुर्रे (1938) ने किया किया था। तथा यह बताया था कि अभिप्रेरणा किसी व्यक्ति को एक यांत्रिक रूप से संवेगात्मकता प्रदान कर उसे अपने उद्देश्य प्राप्ति की ओर बढ़ती है। अभिप्रेरणा का संबंध हमारे संवेगों से होता है। जबकि उपलब्धि का संबंध हमारे अंतिम लक्ष्य से। इस प्रकार से हम कह सकते हैं की उपलब्धि अभिप्रेरणा व्यक्ति को सफलता प्राप्त करने एवं उसके जीवन की प्रत्येक आकांक्षाओं को पूरा करने पर आधारित होती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता :

प्रत्येक मनुष्य का जन्म किसी न किसी प्रकार के समाज में होता है। जो कि उसे सामाजिक प्राणी बनता है। वह उसे समझ में मौजूद लोगों से अपने संबंधों को स्थापित करता है। हमारे देश के छात्र व छात्राएं भावी नागरिक होते हैं। जब इनमें संवेगिक,सामाजिक जैसे गुण मौजूद होते हैं तो ऐसा समाज स्वस्थ समाज की ओर इशारा करता है। औरयह सब कुछ तभी संभव है जब छात्र व छात्राओं को बेहतर अवसर उपलब्ध कराए जाएं। अभिप्रेरणा विद्यार्थियों को हमेशा प्रोत्साहित करती है। अगर

किसी विद्यार्थी में अभिप्रेरणा की कमी या गैर मौजूदगी की है तो वह अपने क्षेत्र में पीछे जाते हैं इसलिए भी यह शोध अध्ययन प्रासंगिक हो जाता है।

3. शोध के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों की छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ :

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों को प्राप्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनायें निर्मित की गयी हैं।

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों की छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही है।

5. शोध समस्या का परिसीमांकन :

प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश के जनपद फर्रुखाबाद तक सीमित है। इस शोध अध्ययन में यू0 पी0 बोर्ड प्रयागराज से संबद्धता प्राप्त जनपद फर्रूखाबाद के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित स्कूलों को शामिल किया है। तथा शोध में न्यादर्श हेतु जनपद फर्रुखाबाद के 12वीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं को शामिल किया है।

✦ समष्टि एवं न्यादर्श :

- प्रस्तुत शोध में उच्च0 माध्य0 स्तर के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में उ0प्र0 के फर्रुखाबाद जनपद के वित्तपोषित एवं स्व वित्तपोषित स्कूलों से प्रतिदर्श चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि के द्वारा किया गया है। तथा प्रतिदर्श हेतु 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों को चयनित किया गया है। इसमें 150 छात्र एवं 150 छात्राएँ शामिल है।

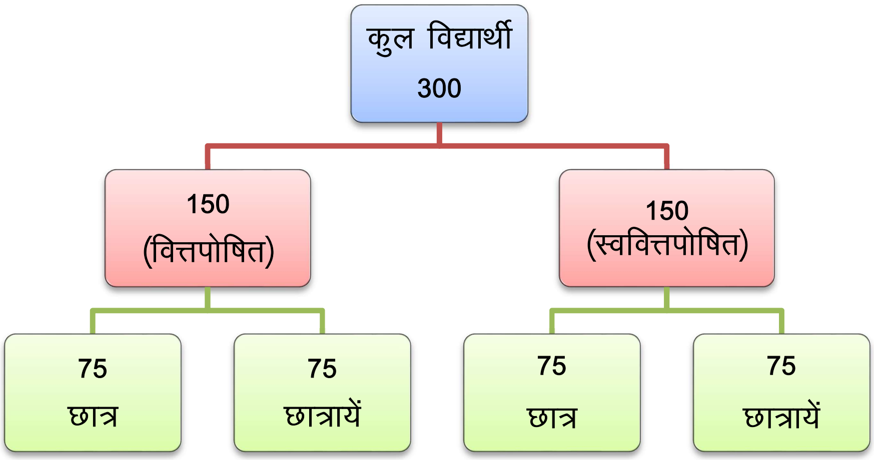

6. शोध अध्ययन विधि :

सर्वेक्षण विधि शोध का अति एक महत्वपूर्ण अंग होता है तथा इसके माध्यम से किसी शोध के समस्या के महत्वपूर्ण पक्षों से संबंधित आंकड़ों के एकत्रीकरण के कार्य किया को जाता है। सर्वेक्षण विधि में किसी में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों,गणनाओ एवं परिस्थितियां को अधिक प्राथमिकता प्रदान की जाती है।

✦ सांख्यिकी विधि :

साक्षात्कार विधि एवं सर्वेक्षण विधि से प्राप्त आंकड़ों का वर्गीकृत तथा सारणीयन किया है। इन आंकड़ों की व्याख्या हेतु व विश्लेषण हेतु विभिन्न सांख्यिकीय विधियों को प्रयोग में लिया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं परीक्षण हेतु – मानक विचलन, मध्यमान, टी टेस्ट,

मानक विचलन आदि का प्रयोग किया है। तथा साथ ही साथ इस अध्ययन में गुणात्मक तकनीकी के विश्लेषण पर विशेष ध्यान दिया है।

7. शोध उपकरण (Tools) :

प्रस्तुत अध्ययन में छात्र–छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा मापने हेतु डॉ0 वी0 पी0 भार्गव द्वारा निर्मित उपलब्धि अभिप्रेरणा टेस्ट (AMT) का प्रयोग किया है। यह टेस्ट 3 बिंदु पर आधारित है। अर्थात एक प्रश्न के तीन उत्तर है जिनमें विद्यार्थी को अपनी सोच,समझ एवं इच्छा अनुसार किसी एक का ही चयन करना है। इस परीक्षण में कल 50 प्रश्न है। जिसे छात्र एवं छात्राओं पर सामूहिक या व्यक्तिगत दोनों ही प्रकार से प्रयोग मैं लाया जा सकता है। शोधार्थी के द्वारा इस टेस्ट को जनपद फर्रुखाबाद के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित उच्च0 माध्य0 स्तर के विद्यालयों की 12वीं कक्षा में ले जाकर विद्यार्थियों को टेस्ट से संबंधित निर्देश दिए गए तथा सभी प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कहा गया एवं उन्हें बताया गया कि उनके द्वारा प्रदान सूचना को पूर्णता गुप्त रखा जाएगा।

8. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :

इसे पूर्ववर्ती अध्ययन भी कह सकते हैं। इससे यह तात्पर्य है कि शोध समस्या से संबंधित सभी प्रकार के पत्र–पत्रिकाओं,शोध–पत्रों, पुस्तकों, ज्ञानकोषों एवं अभिलेखों आदि से होता है। शोधार्थी इनके अध्ययन से अपनी शोध से संबंधित समस्या चयन, परिकल्पना के निर्माण, शोध रूपरेखा निर्माण तथा शोध कार्य की शुरुआत करने तथा इसे आगे बढ़ाने में सहायता प्राप्त होती है।

✶ **अवान, नूरीन तथा नाज (2011)** ने ''उच्च0 माध्य0 स्तर के अंग्रेजी व गणित में शैक्षिक उपलब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरणा, आत्म संप्रत्यय के संबंध पर शोध अध्ययन किया।'' अध्ययन निष्कर्ष में प्राप्त हुआ की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा आत्म संप्रत्यय का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक से संबंध पाया गया। लिंग के आधार पर छात्राओं के पक्ष में भी सार्थक अंतर पाया गया।

✶ **गड़पायले, श्रीमती ज्योत्सना (2016)** ने "उच्चतर माध्य0 विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के आयाम "शैक्षिक सफलता की आवश्यकता" पर आत्म संप्रत्यय व संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव।"नामक शीर्षक पर कार्य किया। निष्कर्ष में प्राप्त हुआ की विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा आयाम "शैक्षिक सफलता की आवश्यकता" पर लिंग का स्वतंत्र तथा सार्थक प्रभाव पाया गया। इसके अतिरिक्त छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा के आयाम "शैक्षिक सफलता की आवश्यकता" में सार्थक अंतर पाया गया।

✶ **मिश्रा, डॉ0 मुरलीधर (2018)** ने "उच्चतर माध्यमिक स्तर पर संस्कृत एवं हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।" निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर संस्कृति तथा हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा उनके भाषा माध्यम से स्वतंत्र है। तथा इससे यह भी स्पष्ट होता है कि उच्च अभिप्रेरणा का भाषा माध्यम से सार्थक सहचार्य नहीं है।

✶ **तिवारी श्वेता तथा डॉ0 अमित कुमार साहनी (2020)** ने "अभिप्रेरणा संबंधित साहित्य सर्वेक्षण का विश्लेषणात्मक अध्ययन।" नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया। अध्ययन निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि किसी भी प्रकार की उपलब्धि पर व्यक्ति की अभिप्रेरणा,रुचि उसके स्वयं के वातावरण जीवन शैली आदि को प्रभावित करते हैं।

9. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोध संबंधित कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिंबित होगा जब एक शोधकर्ता अपनी चुनी गई शोध संबंधित समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन सही–सही किया गया हो। इसके लिए यह अति आवश्यक है कि शोधकर्ता अपने शोध में प्रयुक्त किए उपकरणों के द्वारा प्राप्त जानकारी व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाए, निम्न है।

$\mathbf{H_{01}}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही है।

तालिका– 1

उच्चतर माध्यमिक स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।

क्रम सं0	समूह	प्रतिदर्श संख्या	मध्यमान **M**	प्रमाणिक विचलन **SD**	क्रांतिक अनुपात **cr**	मुक्तांश **df**	सार्थकता स्तर **0.05** सारणी मान **1.97**
1	वित्तपोषित छात्र	75	12.22	5.42	0.676	298	असार्थक
2	स्ववित्तपोषित छात्र	75	11.76	6.17			

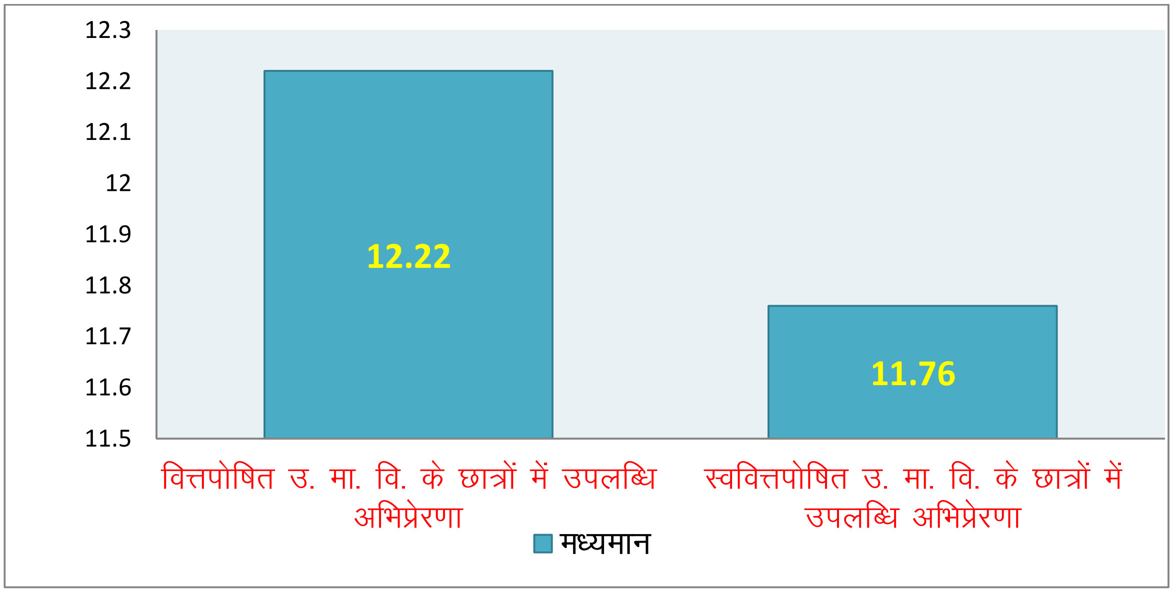

तालिका 1 से स्पष्ट होता है वित्तपोषित उच्च0 माध्य0 विद्यालयों के छात्र (N=75) एवं स्ववित्तपोषित उच्च0 माध्य0 विद्यालयों के छात्र (N=75) के उपलब्धि अभिप्रेरिणा के प्राप्तांको की सांख्यिकी गणना से प्राप्त मध्यमान क्रमशः 12.22 तथा 11.76 एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 5.42 व 6. 17 एवं दोनों समूह के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता हेतु परिगणित क्रांतिक अनुपात का मान 0. 676 प्राप्त हुआ, जो कि मुक्तांश 298 पर सार्थकता स्तर 0.05 के मानकीकृत सारणी मान 1.97 से कम है। अतः 0.05 के सार्थकता स्तर पर **शून्य परिकल्पना** उच्चतर माध्यमिक स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही है **स्वीकृत** होती है तथा शोध परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में अंतर है **अस्वीकृत** होती है।

H_{02} उच्चतर माध्यमिक स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही है।

तालिका– 2

उच्चतर माध्यमिक स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।

क्रम सं0	समूह	प्रतिदर्श संख्या	मध्यमान **M**	प्रमाणिक विचलन **SD**	क्रांतिक अनुपात **cr**	मुक्तांश **df**	सार्थकता स्तर **0.05** सारणी मान **1.97**
1	वित्तपोषित छात्रायें	75	11.947	4.751	0.513	298	असार्थक

2	स्ववित्तपोषित छात्रायें	75	11.627	5.976			

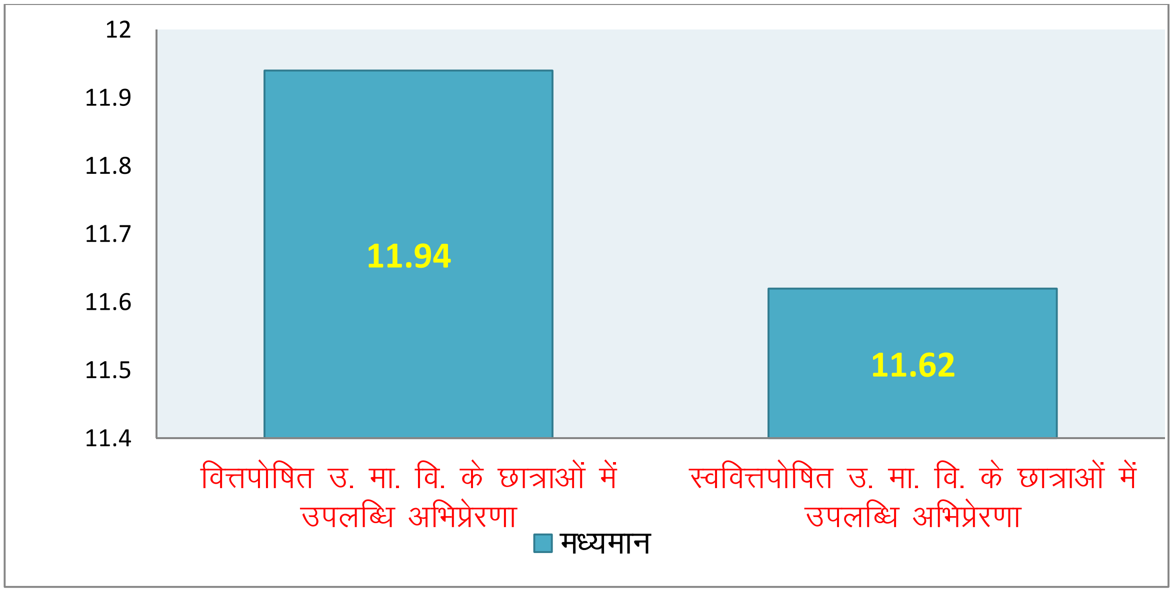

तालिका 2 से स्पष्ट होता है वित्तपोषित उ0 मा0 विद्यालयों की छात्राओं (N=75) एवं स्ववित्तपोषित उ0 मा0 विद्यालयों की छात्राओं (N=75) के उपलब्धि अभिप्रेरिणा के प्राप्तांको की सांख्यिकी गणना से प्राप्त मध्यमान क्रमशः 11.94 तथा 11.62 एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 4.751 व 5.976 एवं दोनों समूह के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता हेतु परिगणित क्रांतिक अनुपात का मान 0. 513 प्राप्त हुआ, जो कि मुक्तांश 298 पर सार्थकता स्तर 0.05 के मानकीकृत सारणी मान 1.97 से कम है। अतः 0.05 के सार्थकता स्तर पर **शून्य परिकल्पना** उच्चतर माध्यमिक स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही है **स्वीकृत** होती है तथा शोध परिकल्पना उ0 मा0 स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में अंतर है **अस्वीकृत** होती है।

H_{03} उच्च0 माध्य0 स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही है।

तलिका – 3

उच्च0 माध्य0 स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

क्रम सं0	समूह	प्रतिदर्श संख्या	मध्यमान **M**	प्रमाणिक विचलन **SD**	क्रांतिक अनुपात **cr**	मुक्तांश **df**	सार्थकता स्तर **0.05** सारणी मान **1.97**
1	छात्र	150	12.627	5.580	1.112	298	असार्थक
2	छात्रायें	150	11.867	6.240			

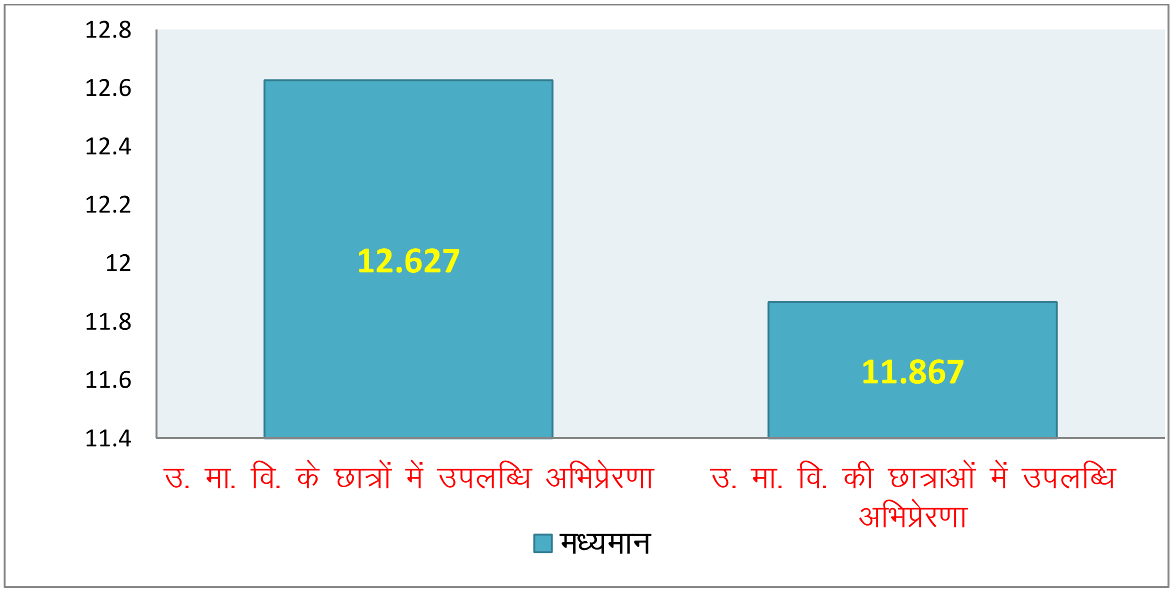

तालिका 3 से स्पष्ट होता है उ0 मा0 विद्यालयों की छात्रों (N=150) एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं (N=150) के उपलब्धि अभिप्रेरिणा के प्राप्तांको की सांख्यिकी गणना से प्राप्त मध्यमान क्रमशः 12.627 तथा 11.867 एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 5.580 व 6.240 एवं दोनों समूह के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता हेतु परिगणित क्रांतिक अनुपात का मान 1.112 प्राप्त हुआ, जो कि मुक्तांश 298 पर सार्थकता स्तर 0.05 के मानकीकृत सारणी मान 1.97 से कम है। अतः 0.05 के सार्थकता स्तर पर **शून्य परिकल्पना** उच्च0 माध्य0 स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही है। **स्वीकृत** होती है तथा शोध परिकल्पना उ0 मा0 स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में अंतर है **अस्वीकृत** होती है।

निष्कर्ष :

किसी भी शोध के निष्कर्ष केवल उसी जनसंख्या पर लागू होते है जिस पर उसको किया गया है। शोधार्थी के द्वारा प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के जनपद फर्रूखाबाद के उच्च0 मा0 स्तर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों तक ही सीमित है। शोध अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित है –

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया।

2. उच्च0 माध्यमिक स्तर के वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों की छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया।
3. उच्च0 माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया।

सन्दर्भ :

गुप्ता, एस0पी0 (2015), अनुसंधान संदर्शिका, इलाहाबाद :शारदा पुस्तक भवन।

सिंह, अरूण कुमार (2013), समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, तथा शिक्षा में शोध विधियां, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास।

सुलेमान, मो0 (2006), शोध मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, पटना : जनरल बुक एजेन्सी।

सारस्वत, मालती एवं मधुरिमा सिंह (2012), शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, लखनऊ : आलोक प्रकाशन।

सिंह, अरूण कुमार (2009), शिक्षा मनोविज्ञान, पटना : भारतीय भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।

- Bhargava, V.P. (1971). Motivation Achieve ment Test. Agra : National Psychological Corporation.

- http://csjmu.refread.com
- http://shodhganga.inflibnet.ac.in
- https://shodhgangotri.inflibnet.ac.in
- www.wikipedia.com
- https://eric.ed.gov